अलब्द अध्याय

उपसंहार
उपन्यास एक आत्मगरीति लिखा है। उपन्यास अपनी विवेकोत्तरी जैसे त्रानीवस्तर, परिसरकारी गता या माध्यम होना, वास्तविक जीवन का अनुमोदन, उदार दृष्टिकोण, अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न काल सम्बन्धी पेठना को पूरी, संस्कृति का दृढ़ परिवेश आदि के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से जीत माना जाता है।

समाज से उपन्यास के सम्बन्ध के अंतर्गत और स्पर्श हैं। उपन्यास के उद्देश्य और विकास के लिए अर्थव्यवस्था उसके अंतर्गत के लिए कुछ से भीतिक और विधास्योगात्मक आधारों की जल्दी थी, जो औपचारिक वस्तु में ही विकसित हुए। उपन्यास के अंतर्गत के लिए अन्यायपूर्ण प्रेषण प्रकाश और गंव-पत्रिकार औपचारिक वस्तु के वैश्विक विकास की देन है तो उसके लेखक और पात्र के स्पर्श में विघानों या दृष्टिकोणों सामाजिक संस्कृति का प्रकाश है। इन भीतिक आधारों के तल्ख-ताल्ख विपरीत धर्म, धर्म - निरपेक्ष जोखिम दृष्टि रूप में यथार्थताओं द्वारा दृष्टिकोण की जताता थी, जो औपचारिक वस्तु को विकसित पेठना को उपलब्ध है। उपन्यास को रचना दृष्टिकोण में वास्तव तथा स्थाप्त, तत्कालीन की महत्ता और मानवता संबंधों को गरिमा को तभी केन्द्रों महत्त्व मिलता, जब औपचारिक समाज का मान्य अपने अनुभव और तर्क के अलवित विषय आलोचनात्मक शक्ति की सत्ता को स्वयंकार करने के लिए तैयार नहीं
यह यमुना में संभव न था। उपन्यास अपने पाठकों को जीवनशैली के बीच पुनाव का संबंध देता है, उसकी सत्यानुसार का विस्तार करता है। इस तरह उत्तम एक नैतिक आयाम है। यह नैतिक आयाम औपचारिक युग का ही है।

उपन्यास के उदय का सामाजिक आधार मध्यकाल होता है। मध्यकाल से उपन्यास को अलग करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि उपन्यास कला के जन्म के मूल में यह यथार्थता काम कर रहा था, जिसका आधार व्यापक मध्यकाल की अपनी आवश्यकता और मूल्यों को लेकर हुआ था। अतः ब्राह्मण, तत्सम्मत प्रतिबंध, व्यक्ति सं समाज का संधिं, तामान्य जीवन पर दृष्टि, व्यक्ति की महत्ता, अंतर्गत के विरोध में वर्तमान पर बल क्लास के त्योहार पर जीवन की यथार्थता का आग्रह, प्रेमित व्यं समाज का परम्परागत करण की आवश्यकता, अन्ये आधिकारिक के त्योहार पर वर्तमान उपलब्धियाँ द्वारा समाज में प्रभावित होने का दाया दे समे प्रगतिशीलता सुलभ: उस मध्यकाल का है जो सामाजिक के गर्व से पूर्वें के लिए छूटता है और अंततः जो युद्धवाद में अपना विकास पाता है।

उन्नीसवीं शती के आंतिम चरण में पूरे देश में सांस्कृतिक बागरण का दौर चल रहा था। सामाजिक समाज की शौकियाँ दूर थीं। अंततः विष्कांस के विकास की गति पाने जितनी मदर होगी और उसके उद्धृत्य पाए जितने सीमित रहे हों, उसके
व्यापक प्रभाव से देश का विविधता त्वमार बप नही सका था।
देश में एक लाखाल मध्यम का उदय हो गया था जो अत्यधिक संवेदनशील था। यदि वर्तम राष्ट्रीय मध्यम सामाजिक भस्मानी की दृष्टि से लोगों लगा था, और वह अनुभव करने लगा था फ़िक
सभी दृष्टियों से हमारा देश अस्थायी होनावरण में है, जीवन के सभी दृष्टियों में जैसे राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक में
परिवर्तन और सुधार को आवश्यकता है। इसके दृष्टि के लिए साहित्य को भी एक महत्मम बनाया गया था। पत्रित: पाते के
विकास के साध-साध गदा का भी विकास हुआ और गदा की विविधता, नाटक, कहानी आदि का प्रादुर्भाव हुआ।

मुगल साम्राज्य का पतन अठारहवीं शताब्दियों में हुआ और उत्तर अपना प्रभाव बढ़ दिया। भारतीय राज्यों और हूरोश की
व्यापारिक बंधनों के बीच, जो अपने-अपने देशों के संबंध में भारत में कम कर रही थी, विशेष संयुक्त बराबर हूरोशियों के पाया में
होता जा रहा था। सोवियत राष्ट्राध्यों में भारत में हूरोशियों
के अधिकार में महत्त्व कुछ रखा और मानोड़म थे, सबकां राष्ट्राध्यों
में उन्होंने व्यापारिक केंद्रों और बीतन की त्यापना करना
शुरू कर दिया। प्लासी और बक्सर की उड़ायों में विवरण प्राप्त
करने के बाद गंगा के निश्चित मैदानी देसों में अनियम के प्रभाव को
ग्रहण पुनर्वाह देनेवाला कोई नहीं रहा।
प्रेम कांग्रेस अधिनियमित कुछ के विश्लेष 19 वीं शताब्दी के लम्बू धूमकेतु में आबादों के विश्लेषण करना को प्रस्तुत, सर्वाधिक स्थानीय कार्यवाह्य में अभियंता देने वाला अभी तब कुछ-कुछ एकाकार होने लगा, जब राजनीतिक आन्दोलन का नेतृत्व दोषीकार से लंबित कार्यवाह्य के अध्यक्ष रियाहरो ने अपने हाथों में है रिया। प्लॉट की लड़ाई को सादों को भाटी भरली थी और रियाहरो तीन उनी दिन प्रेम कांग्रेस शासन का लाल उड़ते की सैयारिया कर रहे थे। प्रेम का निकास तो भी लड़ाई पहले ही जब पहला पुल था, लेकिन यह एक बादशाही स्थिति लागू से लंबित प्रेम नहीं थी। प्रेम वास्तव में दोआधार और मध्य भारत के कुछ भागों से और अगे नहीं पैला। दिल्ली में लाल रिया जले प्रमुख दुर्ग पर कब्जा करने के बाद रियाहरो ने अपने भागों को प्रेम की पोरींड में लाने के वियोजन के संचालन के अपना रिया। इस से अभी जो को प्रस्तुत तो संचालन, अपनी व्यावसायी पर्यटक को बनाने लगा दिल्ली पर धर्म डालने साधन बना रिया। 14 दिसंबर 1857 को होने जाते वो अन्य फौजों को जगह कर ली थी, दिल्ली पर धारावीर बोल दिया और पाँच दिन के बाद सार और बोले पर कब्जा कर रिया। इस के बाद प्रेम रियाहरो के खिलाफ बम्बई सर्वसम्मत रेडॉगो की कार्यवाह्य पूरा हुई। बम्बई के गवर्नर स्लीपरल्टन तक ने रिखा है प्रेम की पर कब्जा करने के बाद प्रेम वाहकों द्वारा रिखा गये अपराध आरोपी है। 19 मार्च 1858 को प्रेम रियाहरो को रहा आरोपी नगर लबनकर पर कब्जा हो गया और राज्य में दो हफ्तों
तक ब्रिटिश पासे लूट और कुलसेआम मपाती रहीं। लूट का माल बहुत अधिक था।

2 अगस्त 1858 को ब्रिटिश संसद ने भारत के बेहतर शासन के लिए एक अधिनियम पारित किया, जिसके लक्ष्य भारत में राजकीय सत्ता ब्रिटिश ताज को हतांतरित कर दी गयी और ऑपरन्सिया के प्रशासन ब्रिटिश और सरकार के प्रत्येक नियंत्रण में आ गया। इस तरह ब्रिटिश शासन का प्रभाव बढ़ता रहा।

ब्रिटेन में ऑपरन्सिया पूर्णता करने वाला अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद भारत का आर्थिक विकास अधिकारिक स्तर में उस वर्ष के दिन में होने लगा। ब्रिटेन की समावृत नीति और व्यवस्थापार में क्षति नौकर के कारण दस्तावेजों के जोड़ने से गिरावट आयी। क्षति नौकर के कारण क्षतावसूच्यों को क्षुद्र-सूचता और बुधम - होने वाला बड़ गई। भारत को धीरे-धीरे ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार और ब्रिटिश उपयोग के क्षेत्र में परिवर्तन कर दिया जाता था।

भारत में ऑपरन्सिया शासन प्रारम्भ होते-होते मुगल शासकों को एकत्र इतिहास हो पुरोहित थी। शिक्षा की कारण तथा तरकारीन तालमेल को दर्शा और इस पत्तन का बहुत सोया तक कारण थे।
विलास-प्रियता तथा अत्यधिक मद्यपान ने अधिकारियों को पतन के गद्दे में फिरा दिया था। समाज के प्रत्येक वर्ग में अंधखवास, अशिक्षा तथा कुर्सियाँ आदि पैली हुई थी, जो उसको उन्नति में सब प्रकार से बाधक थी। जनता का ज्योतिष आदर पर विश्वास था, अतः अज्ञानी सब्ब अपट लोगों ने उसे ठीक का एक रास्ता यह भी अपना रिया था। धार्मिक अंधखवास से जनता की उन्नति के मार्ग बन्द कर दिये गये थे। परिवर्त-होनात्तात्तरकरण समाज का मुख्य दुर्भाग था। मस्त तथा अन्य धार्मिक स्थान व्यापार के बड़े-बड़े अदेर बन गुफे थे और लोग उन्हें बनकर नरक में गिरते थे। देशों का प्रीया था। जनता में नीतिकता की कोई थी। देश की वार्ता भी नक से घुमकी थी।

शासनों में तथा उच्चराज्यों अधिकारियों विलास प्रियता त्यंबक-भक्त तथा सेवक-प्रदर्शन की महाना व्याप्त थी।

इस युग के उपन्यासकारों ने परम्परागत कथा सतित्व को ही अपना आधार माना। इनकी रचनाओं का उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करना और साध ही साध लुकवावाड़ू निष्ठोल होता था। इन कृतियों के समान ही आगुस्तों और रिलियों उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य होता था मनोरंजन प्रदान करना।

इत्यादि कारण इस युग के उपन्यासों की प्रमुख विवेच्या थी, उनका धार्मिक प्रश्न होगा। तत्पर की सूचना से इस युग के उपन्यास परम्परा से डटकर प्रयास का न्वीन पश्चात लेकर आये।
1882 में श्रीनिवासदास के सामाजिक उपन्यास "परिश्रम मुरु" का प्रकाशन हुआ। दौरे-दौरे उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को स्थान देने निश्चित हुआ। 1918 में हिंदी उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द का प्रवेश हुआ। प्रेमचन्द अपने युग के लघु प्रमुख और प्रीति नीति उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों की प्राणन विकस-विकास में एक यह है कि उनमें एक क्रमशः विकास रेखा दृढ़तामय होती है। उनके अध्याय वात्र सेते हैं जो काल्पनिक जगत के माल से खोपकर वर्तमान जगत को व्यवहारिकता को और बदले प्रलोभित होते हैं।

इस उद्भवालीन समय भारतीय उपन्यास साहित्य में पाए सामाजिक उपन्यास साहित्य हो या प्रेमचन्द के सामाजिक कृतियों का निश्चित लेखकों का आयतन रहा। इसलिए अर्जित बहुत साहित्यालीन सामाजिक उपन्यासों में तर्कालीन समाज के परिवर्तन कृतियों, मुख्य: पांडित्यालीक कृतियों की समस्याओं, संयुक्त परिवार, पारिवारिक बाल, विद्वान जीवन, बालकवाच, व्यवसाय, वर्ण वर्ग, पतित का आदर्श, देवदासी का कृतित्व जीवन, ग्रामीण सूर्यमण, पुरुष अधातल के अधिकोष अर्थार्थ, देवर प्रथा, स्त्री-विक्षम, भूमिकावार, सत्ता-प्रथा, सरकारी कर्मचारियों में पौर-व्यापार में व्यापार का प्रतिष्ठान कर्म के लिये हुआ तथा।
तेलुगु राज्य को व्यापक रूप में दक्कन या दक्षिण कहा जाता था। इस राज्य में मुगलों का शासन 1687 ई. में आरम्भ हुआ। गोलकोण्डा राज्य के पतन के बाद समस्त तेलुगु राज्य मुगल साम्राज्य के आधीन हो गया। तेलुगु राज्य 1687 से 1724 तक मुगल सूबेदारों के शासन में था। इस समय एक भी गाँव मुसलमानों के हृदयांतर से नहीं बच तका। धार्मिक मुसलमान शासन मानदरों को हटाये गए। हिंदू सिक्कों को लटकाये गए। हिन्दू संतुलन को अस्तित्व में होतो था।

असफाटी निजाम राज्य के संस्थापक निजाम-उल-मुलक के दादा अब्दुर खान मुगल दरबार में रहते थे। उन्होंने 1687 के गोलकोण्डा घुस में प्रधान दैवीका निमाशक को गिरफ्त पाने की थी। बाद में उनके पुत्र निजाम-उल-मुलक के पिता गहरदुद्दीन मालका और महाराजा के सूबेदार नियुक्त हुए थे। 1707 में औरेंजगढ़ की मृत्यु होगई। 1710 में गहरदुद्दीन की मृत्यु भी हो गई। दिल्ली का राजा पास्तिमत्यर गहरदुद्दीन के पुत्र कवर उद्दीन प्रथम आसमा ने "निजाम-उल-मुलक" को उपाधि प्रदान कर दक्कन में राजप्रतिनिधि नियुक्त किया। तेलुगु राज्य में निजाम शासन 1713 में प्रथम आसमा निजाम-उल-मुलक से हुई टोकर 1947 में न्याश मोर उस्मान अली खाँ से अंत्य होता है।
1857 के महान सैनिक विद्रोह का प्रभाव जितना रहियों प्रदेश पर पड़ा उसता तेलुगु प्रदेश पर नहीं पड़ा। निम्नांक ने प्रथम मन्त्री सताराम ने अंग्रेज़ों का पक्ष लेकर विद्रोह को कूलक कर देश को उन्होंने गुलाम बना दिया।

1758 के तीसरे कार्तिक पूर्ण में अंग्रेज़ों को रियाया गया। 1762 तक प्रभान्त-सियासत और दूसरे ग़ायबों को पराजित कर अंग्रेज़ों ने जिस राज्य को प्राप्त किया था, उसे रियाया रखने के लिए उन्होंने धोड़ा समय लगा। 1768 से 1838 तक तरकारी के स्तरों में और 1800 से 1804 तक राजशाही में अंग्रेज़ों के विद्रोह होते रहे। 1803 में तिमाह मनरे आत्म प्रदेश के अधिकारी नियुक्त हुए थे। ये उन्होंने बाटाइरार्ड़ के विद्रोहों को प्रभाव सालों में कुशल रियाया और विद्रोहियों को निरोधक रूप से साथ दंड देकर उनके हुप्त को नष्ट कर दिया। 19 वीं स्थापना के आरम्भ होने तक तेलुगु तेलुगु देश के अधिकारी प्रदेश आंदोलन के प्रताप में आ गये। उन्होंने देशकर्मियों के नाम से निम्नांक के शासन में तेलुगु राज्य में अन्तर्भाषा बन गया। उस प्रसंग में भी अंग्रेज़ों के सार्वजनिक अधिकार को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार तेलुगु राज्य भी अंग्रेज़ों के शासन के अंतर्गत आ गया।
ब्रिटेन की सला 1776 ई. को औपयोगिक कार्य के कारण तेलुगू देश में ही नहीं आया। पूरे देश के आधिक रेखाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। विशेषतः ग्वाँडों का आविर्भाव हुआ। इस से तेलुगू देश के वस्त्रहार बनाया हुआ, प्रारंभिक काल से तेलुगू राज्य की जनता अपने गौरवमान केन्द्रों से पत्ता लगाने थे फिर भी कुएं उपयोग आधिकारिक क्षेत्र में तथ्यसूत्र स्थान प्राप्त कर लुभा थे। उनके लोग बुनाई, बुढ़ाई गिरिजाआदि उपयोगों के मद्देनजर अपने गौरवों का नीति थे। इन्हीं औपयोगिक कार्यों के फलस्वरूप उत्पन्न होने लगे वर्तमान तथा अनेकों के आधिकारिक ने प्रलयकर देश में प्रभावित उपयोगों का अंत कर दिया।

19 वीं और 20 वीं शताब्दियों में भारत के अन्य प्रांतों को भी हिंसा तेलुगू प्रदेश ने अनेक सामाजिक परिवर्तन का समापन
किया। यहीं प्रभाव बदल लूटे भारत में पड़ा फिर भी तेलुगू प्रदेश ने पुरातन स्थान से कितने परिवर्तन का समापन
kिया। इस समय तेलुगू प्रदेश बदल दिखाई दिया। यहीं प्रभाव में नवोद्वारों में आसफहारों गतिविधियों ने शासन प्रति बना
मित्र था। परंतु भी नवोद्वारों के दृष्टिकोण में छूटाः का शासन यही
रहा था। इस तरह तेलुगू देश के प्रभाव अलग अलग पाया क्षेत्रों में जोड़ते रहे। पहले का सामाजिक विकास भिन्न-भिन्न तरीकों में हुआ।
इस प्रकार 19 वां और 20 वां शताब्दियों में राजनीतिक, सामाजिक, तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में कई आदर्शों ने आनुष्ठानिक बनता को पर्याप्त स्थ में उत्साहित या प्रभावित किया है। इस प्रभाव को इतिहास के रूप में गृहण कर आनुष्ठानिक प्रगति के लेखकों ने समाज को विभिन्न दृष्टिकोणों से पीरशिला-अनुशीलन कर कई उपन्यासों को रचना की है और उपन्यास तात्कालिक की श्रीरूपमें योगदान किया है।

लेखा उपन्यास तात्कालिक के इस आरम्भिक काल में उपन्यास को भिन्न प्रदूषितों को भी परखा जा सकता है। इस काल के उपन्यासों को अध्ययन की सलाह के लिए शैक्षिक, सामाजिक, हस्तिनामात्मक, जातियाँ, राजनीतिक आदि वर्गों में विभाग किया गया है।

श्री पिलकुमुरति लक्ष्मीनरसिंह पठलौं लेखा के प्रथम एयर-हार्टिक उपन्यासकार है। इनका प्रथम उपन्यास "रामपन्धु विजयम्" को पिन्नामञ्जी पत्रिका का प्रथम पुरस्कार मिला। इस तरह के अन्य शैक्षिक उपन्यासों में अर्किप्राण रामाकांत का "रामपन्धु गुटुटल" हृद्याराम रामायणकाम का "विजयनगर सामाजिकम्", देवक पार्वतीयवर काव्यों का "प्रमदावनम्", श्री वेलाल श्रीमान्राज का "राणी संग्रह" आदि उल्लेखमय है।
श्री कन्नूर वीरेश्वरलाल तेलुगू के प्रथम उपन्यासकार होने के साथ-साथ प्रथम सामाजिक उपन्यासकार भी है। इनका प्रथम उपन्यास "राजेश्वर परिश्रम" को तेलुगू के प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है। इसके बाद इनके पदकिन्तु में चलने वाले पिलवृत्ति लक्ष्मीनारायण पन्तुलु के सामाजिक उपन्यास "रामचन्द्र पिलवृत्ति" को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

तेलुगू साहित्य में लगभग 1907 में बालसो उपन्यास लिखे जा रहे हैं। प्रारम्भ में जो उपन्यास आये वे "पांचकोंडेव" जैसे बंगाली लेखकों की रचनाओं के अनुसार थे। बुड्ड अंगत तक ऐसे उपन्यास अन्य वर्तमान भाषाओं से तेलुगू में अनुवाद किए रहे हैं। मायादो, मनोरमा, मायावती, पीटकान्ताराम, भृषुद्र आदि उपन्यास इसी कोटी के हैं। पंडितदास, कन्नूरदेव आदि अन्यों द्वारा लिखे द्वारा उपन्यासों के भी नाम लिखे जा रहे हैं।

हास्यसाधक उपन्यास साहित्य में भी कन्नूर वीरेश्वरलाल जो प्रथम है। इनका "सत्यराजा की पूर्ण देश की यात्राएं" और इसका दूसरा भाग "आदिमलयालम" को प्रथम हास्य रचनाएँ मानते हैं। इस काल के हास्यसाधक रचनाओं में पिलवृत्ति का गम्भीर, मोक्षवाद का सारीरिक यात्रासम्, मूनिमार्जिकम का कांति आदि उल्लेखनीय है।
उद्वेद्ध कालिन उपन्यासकार अपने उपन्यासों में समकालीन
प्रौढ़तियों कैसे पिछलापन, अशीव्यास, भारतीय आदि गुरुतियों
का व्याख्या पिछला प्रस्तुत किया।

हिंदो उपन्यास के विकास का में विधा के प्रसार के
साथ-साथ आध्यात्मिक करण भी हुआ है। पुलत: देश के राजनीतिक,
सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी परिस्थितियों में
परिवर्तन होने लगा। विकास का हुआ के पहले दर्शन में भारतीय जनता
के सामने केवल एक ही धर्म प्रमुख धर - स्थलनता। हिंदू
स्थलनता के तर्क बाद अनेक समस्यां उपस्थि हुए। उनमें पुनरात्मा-
वास की समस्या, देशी राज्यों के पिलोनिक करण, प्रगतिविक डिकाइयों
के निर्माण का विलास विधा संघ राष्ट्र की समस्या
प्रमुख बन गई – पुलोवादो या उधोगविह वर्ग, मजदूर या कामगार
वर्ग, विश्वविद्यालय व जीवितिज्ञ वर्ग। वे पार दर्शन चार विद्वानों
के प्रारूप हैं। पुलोवाद, आध्यात्मिक करण पास्त्रास्य अनुक्रम, भौतिक
साधनों की ऊपत्ति ने एक और बड़ी-बड़ी इमारतों, राजभवनों
को पता खिया तो दूसरी और गरोबी के प्रतीक इमारतें झोपड़े
विलय खटे होते आ रहे हैं। संक्षण में भारत को दर्श
निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है। वनलोट ने ध्याल को
भावना को क्रांति आदि से संघर्षित परम्परागत मूल्य सामाजिक
व्य के सामाजिक हो गई हैं। प्रामृथन दूस्सास सामाजिक मूल्यों
श संक्षण हारा निरोक्त हो जाने पर नए स्तर मूल्यों की
स्थापना हो रही है। मैरिक अधिकारों से ध्याल के मानसिक
इन संस्थानों के प्रभाव से राजनीतिक एवं सामाजिक विवार धारा में परिवर्तन आया है। देश को बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों ने अनेक विवार धाराओं को जन्म दिया है। आप विभिन्न दृष्टिगोचर दासों का जन्म भारत में भी हुआ है। ये राजनीतिक वाद मुख्यतः गांधीवाद, मार्क्सवाद एवं समाजवाद के त्यों आये। इन होनों को अभिव्यक्ति का स्वरूपका के बाद के रहनों उपन्यासों में हुई है। खभाल के उपन्यास 'देशों देशों' में मार्क्सवाद का अर्थ समाज के नियामक बन्दित किया गया है। राथ्याराम के "दिव्यादर्श" एक समाजवादी चेतना उठका उपन्यास है। अनेकों ने "दुनिया" उपन्यास में गाँधीवाद का उपयोग किया।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय समाज अस्थिरा गए थे। ग्राम समाज वर्ण व्यवस्था की अस्थिरता में जबर्दस्त हुआ था। लेकिन अंग्रेजों के आगमन के साथ भारत में उन नये वस्त्रों का प्रवेश हुआ जिसमें नववागरण औद्योगिकी, देशात्मक अनोखी, नवीनता और ताज़ाता का समावेश था। आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन के कारण महानगरीय समाज के संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा। अब वित्तीय का स्थान वर्ण ने उस संयुक्त परिवार के स्थान पर आपातविक परिवार पनपने लगे। औद्योगिकी ने पूर्वी होती वर्ष को जन्म दिया तो औद्योगिक विकास एवं शिक्षा का प्रसार ने महत्वपूर्ण
यह युग राजनीतिक उत्कृष्ट-पृथ्वी का युग था । सामाजिक उत्कृष्ट-पृथ्वी की समाधान, हिन्दू मुसलमान झड़े, कांग्रेस का राजनीतिक संघर्ष तथा गांधी का अहिंसावाद इस युग के उपन्यासों में स्पष्ट दिखाई देते हैं । इस विकासकार के उत्तरार्ध में तब 1940 के तक उपन्यासों में और भी आधिक गहराई आई जोधन के प्रीति दृष्टि कोण और भी आधिक विस्तृत हो गया । सामाजिक यह परिवर्तन नए सम्बन्धों तथा समस्या के स्थान पर दिग्गज के कारण आया था । इन कारणों को जन्मदेनवालों तकालीन सामाजिक तथा आधिक विशेषताएं थीं । सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति धर्म के दायरे को तोंडवर राजनीतिक प्रक्षेप- यात्राओं का रिकार्य बन गया था । जोधन जोधन पदक्षेप ने समाज को दो विपरीत दिशाओं में बाँट दिया था । इस युग के उपन्यासकार व्यक्ति वादी तथा सामाजिक दर्शनों तथा स्थान पहले बाते थे । हिन्दू उपन्यासों को प्रेरीत यों के आधार पर उनको सामाजिक व्याख्यान, व्यक्ति वादी मनोविश्लेषणात्मक, आध्यात्मिक, व्याख्यात्मक, सैद्धांतिक आदि धर्मों में विभाजित किया गया था ।
प्रेरणपूर्व दिनदहों के सबसे पहले सामाजिक प्रारंभिक उपन्यास-कार है। इसका पहला उपन्यास "लेकासदन" से लेकर "गोदान" तक के सभी उपन्यास सामाजिक हो है। इस युग के अन्य सामाजिक उपन्यासों में कंकाल, तितली, कल्याणी, लालपंजा, संगाराम, दिल्ली का दलाल, हुड़दय को माता, भाई, लान, रामरहिम, गिड़, मनोज का ख्यात, गोरे का गोरे, मुद्रा का दोला, बुद्ध और गंगा, मेघा आदि उल्लेखनीय है।

विकास युग के ख़ास क्षेत्रों उपन्यासों में कंकाल, भूल बिसरे, पिता, मिर्जा दोवारे, साराकाहर, हुड़दय मसूल, मुन्नहों का देवता, रेखा, पियाय़ाह, राम दरबारी, उल्हेड़ हर लोग, अन्ये बनार कहारे, मुन्नह के त्य आदि प्रमुख है।

इस युग के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में हमीरता, ल्यागमच, परद, निवारित, जिखों, बहाल का पंखी, बैबर एवं जोवनों, नदी के ढीप आदि उल्लेखनीय है।

इस युग के अपनी उपन्यासों में रातानाथ की धार्मिक, बल्लालनामा, दल्ला के बेटे, मेला आपल, सागर लहरे और मुन्नह, कबरक पुंभारु, ब्रह्मचर्य, पानी के प्राचीन, अपने अपने आनबौ आदि प्रमुख है।
व्यंग्यात्मक प्रमूहितत्सत उपन्यासों में गिरते दीवारें,
सारा आकाश, हदीर, होरक बांधते, परती परिवह, मेला उपिल,
रामदरबारो, त्यागपत्र आदि निकाला युग में प्रमुख है ।

इस विकास युग के ऐतिहासिक उपन्यासों में इरावती,
गदातुंदार, मुगनवनी, पिन्चाक, सिरसेनापति, बय यारदेह, लेखलों
की नगर युद्ध, दिग्य, बाणमेट ने आत्मकथा, मुनि का टोला,
बहती गंगा, शतारंज के मोटरे, मानस का एंड आदि प्रमुख है ।

इस युग के विभिन्न उपन्यासों में समग्रतान सामाजिक
समस्याएँ जैसे धार्मिकता, विध्वंस समस्या, अंधकार की समस्या,
केवल वृत्ति समस्या, मूलोंदरों आर्थिक विभाजन से उत्पन्न
समस्याएं तथा उनकी प्रतिकृतियाँ आदि का विषय रिक्या गया ।

लेखलो लाहित्य के विकास युग का आरम्भ उन्नीसवीं शती
को तीसरी दशक में हुआ । यह समय भारत देश के इतिहास,
समाज और लाहित्य में भी उद्भव महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनशील रहा
है । इस युग की मल्ला प्रथितत्या व पारंपरिकताओं जैसे राजनीतिक,
सामाजिक, धार्मिक एवं लाहित्य आदि का प्रभाव लेखलो लाहित्य
पर स्पष्ट रूप से परेरोक्षा होता है ।
भारतीय बनता द्वारा माइट्रिंग-देवम्स्पार्ट्स के प्रस्तावों को भर्तिता लग्द 1916-18 के प्रथम महायुद्ध ने लेकर को अध्ययन प्रभावित किया था। 1919 के वांगमार्क वाला बाग के हल्यांकाइंड तथा परिवर्तनीय तथा समालोचन के सत्यांग ने बनता को उद्देश्यित तथा प्रभावित किया था। भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन के राजप्रभुपि गाधी द्वारा ने उपलब्ध प्रतीत करते ही राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में अपनीतीक परिवर्तन हुआ। आन्दोलन ने भी उस वांगमार्क नेता के पदोन्नति पर पलक असह्योग आन्दोलन के द्वारा स्वतंत्रता समर में अर्जीन बन अपने भाई-ताहस तथा शीत-सामदर्श को प्रभावित किया। उस समय आन्दोलन में कई परिवर्तन आये। सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गयीं।

उस समय आन्दोलन की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों के आन्दोलनों का प्रतीत करते हुए अनेक देशमुक्त और लेखक विभिन्न उपन्यासों के साथ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, हास्यसार, राजनीतिक, मद्दतक उपन्यासों के समाहर है।

इस समय ने लिए गये सामाजिक उपन्यासों में उन्नत लक्ष्मोनरायण के मालपली, अर्धव बाँग्पालु के कोरंकी, नारायण राय, विद्वान सत्यांगरायण के देशमुक्त, कोरंकीत्र प्रभास कुदम्बराय के वदु, बो-पी-कुर्णारायण के कोर्लबोमलु और बूंपी बाबु के फिलकुम्मिगिराइ आदि सुप्रसिद्ध है।
लन् 1940 के बाद आन्द्रे के उपन्यास पर एक नया प्रभाव पड़ा। नमक सत्याग्रह, सिद्ध तपस्या, "भारत कोड़ो" आन्द्रे लिखता है, जो सम्बन्ध रामायण के तार्किक विषयों और मानवता के निर्देशन के रूप में काम करता है। फलतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का विकास हुआ। इस समय मे मनो- वैज्ञानिक उपन्यासों में कोई विभिन्न रूप लेपण, मोरियोन और खोलार ने पिला। यहीं, उदाहरण के अन्तर्गत जीवन विषयों और परमेश्वर शक्तियों का घोषणा, शक्तियों के रूप में मूर्तियों, रंगों, लक्षणों, घटकों का उपयोग, रजस्त्रिय दिग्विजय शक्तियों के अनुक्रम, उत्तरत लक्ष्मण राज के अधीन राज्य अधिकृत उत्तरत ऊतक राज्य शासन द्वारा आदि उल्लेखनीय है।

दिल्ली के हास्यसात्त्विक उपन्यासों में रिचर्ड लक्ष्मणबाबू के गणरूप, भीमराजु नारायणशैली के पंडुं, कर्नल, मुनि विधीय विषयों के कार्यक्रम, मोरियोन रूप से वारिस्टर पर्याप्त पाया गया। कोई कृषिशाही, कुटुंबकराय के कोल्ल कोठु, मूल्यका वेवरमण के वृो आदि प्रमुख है।

लक्ष्मणबाबू उपन्यास उत्तरत में राजनीतिक उपन्यास कहने योग्य उपन्यासों में उन्नत लक्ष्मीनारायण के मालिक, उपल लक्ष्मीनारायण के अधीन आदि, महोदय रामरामनारायण के राधाकृष्ण, ओरवार, दानवा - नल, आदि दिग्विजय तत्त्वनारायण के वृद्ध सत्याग्रह, आदि विद्यार्थी के प्रशिक्षण शीर्षक होते हैं। लक्ष्मीनारायण के रिंगर्वि आदि उल्लेखनीय हैं।
इस उम के सैलाहितिक उपन्यासों में फिलनाथ सत्यनारायण के संग्रह, बक्सलेनानी, कोडिमेट्टू, अडव पापलापु के दिमांदु, गेन-गना रेडो, नारेन नरसिंह सारस्वतके नारायण भट्ट, सुमदेव, मलारेडो, नेल्लदो वेकट रमण्याय के पठवाल्डाय, व्यापारी, मूहावलो, नेल्लदो तवर के पांडु खान, मलाल बुंधा के तंबाकु वनस्पति, राम पांडु, दूतपाल श्रीराममुर्ति के युवन - विजय, गुडराज सेकर, कोलकाता श्रीराममुर्ति के पिताक, पिलका गण्यतिरक्त लिखी के मोताविक आदि उल्लेखनीय हैं।

इस उम के दिविन उपन्यासों में समाजतन सामाजिक बंधवाय के जैसे ग्रामिक, विद्या समस्या, अन्नदों की समस्या, देवयानीक की समस्या, पुरुषोत्तर आदि की विषमता से उत्पन्न समस्याएं तथा उनकी प्रियतिथिक आदि का पिताक रिकागा गया।

प्रेमलुभ आयुष्य के अधार पर इतना अक्षा क्यों जा तकरा है कि ग्राम के अतिरिक्त के साइन साइन उपन्यास का भी साहित्य के अन्तर्गत आता है। उपन्यास का सामाजिक अधार वस्तुतः मध्यवर्ग ही है जो आदिवासिक समाज की उपज है। यह वर्ग अत्यन्त स्वेदनांत्य है और वह अन्यथा करता है कि हमारा देश लगभग दृष्टिकोण से अत्यन्त लोग दिखा है, लोग के लंबी दृष्टियां में परिवर्तन के और
हिंदु उपन्यास के उद्भव काल के पर्वत के लिए साहित्य को भी माध्यम बनाया गया। परंतु: पढ़ के विकास के साथ-साथ गद्य का भी विकास हुआ और गद्य की विभिन्न विधाओं जैसे उपन्यास नाटक, कहानी आदि का प्रादुर्भाव हुआ।

हिंदु उपन्यास के उद्भव काल और विकास काल के पूर्वार्ध तक हिंदु और तेलुगू दोनों प्रसार भी अंगुलो गान के आधिकार में रहने के कारण राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव प्राप्त और कई दोस्तियों का विभाग प्राप्त हुआ। हिंदु और तेलुगू के स्वतंत्र जयवर्त उपन्यासों में समाजसेवन आंदोलन, विषयानुसार, आधुनिक आदि कुरौनियों का विरोध किया गया है। स्वतंत्रता आंदोलन समय के दोनों उपन्यासों में देश भी भक्ति तथा स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बन्धित समस्याओं का प्रतिकूल हुआ।

इसी समय में दोनों उपन्यासों के विभिन्न प्रदूषितत्व जैसे सामाजिक यथार्थताओं, व्यक्तित्वों मनोविश्लेषणों, आंदोलन आदि का विस्तार हुआ। इन उपन्यासों में भी समाजसेवन सामाजिक, व्यापक समस्याओं का प्रतिकूल किया गया।

निश्चित: यह कहा जा सकता है कि हिंदु और तेलुगू उपन्यासों के उद्भव और विकास में समानताएं अधिक और विभिन्नताएं कम हैं।
हिन्दो और तेलुगु उपन्यास के शिल्पमय पिकात में भी 
समानताएँ ही अधिक दिखाई दे रही है । कारण ये हो सकता है 
कि हिन्दो और तेलुगु दोनों उपन्यासों के जन्म के मूल में पाश्चात्य 
उपन्यास का प्रभाव था । हिन्दो के प्रथम उपन्यास " परोक्षगुरु " 
और तेलुगु का प्रथम उपन्यास " राजेश्वर पारशुराम " दोनों को 
परखने से उक्त कथन की पुष्टि मिलती है । उपन्यास के शिल्प 
शिल्प विज्ञान में भी हिन्दो और तेलुगु के उपन्यासों का पिकात 
क्रम : घटना प्राधिक शिल्प से वर्णमात्रिक शिल्प की ओर, वर्णमात्रिक 
से नाटकीय और नाटकीय से प्रतीकात्मक और विशेषता शिल्प 
की ओर बढ़ा है ।